दीन–दयाल अन्तयोदय योजना

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

पशुसखी प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

छ.ग.राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

(बिहान) रायपुर

पशुपालन का सामाजिक एवं आर्थिक महत्व :–

- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन का विशेष महत्व है।

- भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामों में निवास करती है, जो कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है।
- भारत में पशुपालन को अधिकांशतः पशुपालन पारम्परिक तरीके से किया जाता है।
- कृषि एवं पशुपालन एक–दुसरे के परिपूरक है।

पशुपालन की वर्तमान स्थिति :–

वर्तमान परिवेश में ग्रामीणों के द्वारा ली जाने वाली पशुपालन गतिविधियां निम्नवत है :–

1. **गायपालन**
2. **बकरीपालन**
3. **भेड़ पालन**
4. **मुर्गीपालन**

पशुसखी चयन की पात्रता हेतु मापदण्ड :–

- कम से कम 12वीं कक्षा उत्तीर्ण हो साथ ही पढ़ने एवं लिखने का अनुभव हो।
- उम्र 20 से 45 वर्ष होना चाहिए।
- एक वर्ष पुराने स्व सहायता समूह का सदस्य, जो 50 स्व सहायता समूह की बैठक में भाग लेने में सक्षम हो।
- चयनित ग्राम की निवासी हो।
- पशुधन विकास के प्रति रूचि रखती हो तथा सरलता से सर्वश्रेष्ठ एल.एस. कार्य प्रणाली सीखने के प्रति अनुकुल हो।
- जरूरतमंद महिला का चुनाव करे जो अतिरिक्त आय अर्जन करना चाहती हो। जिसके स्वयं के पास 02 से 04 पशु हो तथा उन्नत पशु प्रबंधन का कार्य कर रही हों।
- उच्च संचार क्षमता वाली महिला का चुनाव करें।
- आसपास के ग्रामों में भ्रमण करने पर विश्वास रखती हो।

पशुसखी चयन की पक्रिया :–

- महिला का स्वयं का आवेदन –
  1. जीबीएलजी (गोट बेस लाईवलीहुड ग्रुप), डीएलजी (डेयरी लाईवलीहुड ग्रुप) में अपनी अच्छी साख रखती हो।
  2. आवेदन ग्राम संगठन बैठक के उपरांत आमंत्रित किया गया हो।

- महिला का चयन जीबीएलजी / डीएलजी / वी.ओ के सर्वम्मत से किया गया हो।
- पशुसखी जीबीएलजी अथवा डीएलजी में से किसी एक समूह से चयनित किया गया हो।

- चयन उपरांत एक सप्ताह का क्षेत्र इर्मशन करवाया जाए।
- अंतिम चयन ग्राम संगठन व क्लस्टर संगठन के ऑफिस बीयरर् द्वारा किया जावेगा।

<u>पशुसखी चयन की भूमिका एवं जिम्मेदारियां</u> :–

- पशुसखी द्वारा स्वयं या दिये गये गांव में 40–50 महिलाओं या 03–04 समूह (जीबीएलजी/डीएलजी) को पशुपालन गतिविधियों से जोड़ने का कार्य किया जावेगा।
- पशुसखी द्वारा समुदाय व स्व सहायता समूह सदस्यों को गायपालन, बकरीपालन एवं मुर्गीपालन के प्राथमिक उपचार जैसे टीकाकरण, पेट में गैस बनना, दस्त, घाव, अपच, पिस्सू, किलनी एवं कृमीनाशक के प्राथमिक उपचार की दवा करने की जानकारी बैठक में दी जावेगी।
- समूह सदस्यों को पशुपालन विभाग की योजनाओं की जानकारी देना।
- पशुआवास सुधार करवाना।
- दुग्ध सहकारी समिति के संचालन में सहयोग करना।
- किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाला चारा, बीज, मिनरल मिक्च उपलब्ध करवाना।
- वर्मी कम्पोस्ट, एजोला उत्पादन, कम्पोस्ट बायोगैस के बारे में जागरूक करना।
- प्रतिदिन प्रक्षेत्र भ्रमण कर कम से कम 02 परिवार (जीबीएलजी/डीएलजी) को पशुपालन के संबंध में तकनीकी जानकारी दी जावेगी।
- प्रत्येक माह ग्राम स्तर पर (जीबीएलजी/डीएलजी) के साथ मासिक बैठक संपन्न कराने का कार्य किया जावेगा।
- किसी भी समूह हितग्राही के यहां विशेष बुलावें पर 24 घंटे के भीतर सहायता हेतु अपनी उपस्थिति देना अनिवार्य होगा।
- ग्राम/क्लस्टर संगठन की मासिक बैठक में अपनी मासिक प्रगति प्रतिवेदन (प्रक्षेत्र डाटा)
- पशुसखी द्वारा समूह के किसी भी हितग्राही को सर्विस देने (डीवर्मिंग, कैस्ट्रेशन, मिनरल मिक्चर) प्रदाय करने पर सर्विस चार्ज की पावती देना होगा।
- जिला एवं विकासखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में ।

<u>पशुपालन के 07 सूत्र</u> :–

1. उपयुक्त नस्ल चयन
2. उचित आवास

3. संतुलित आहार
4. नियम पालन
5. रोग बचाव एवं उपचार
6. लेखा–जोखा
7. उचित मूल्य प्राप्ति

उन्नत पशु प्रबंधन

क्या	कैसे	फायदे
नस्ल सुधार	उन्नत नस्ल के पशु रखना उन्नत नस्ल के सांड,या पडे से अथवा कृत्रिम तरीके से गाय या भैंस को गाभिन करवाना गाय या भैंस को गर्मी के आने के 12 से 18 घंटे के बीच गाभिन करवाना	अधिक आमदनी, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मे उठाव।
सार या बाडे मे सुधार	मौसम के अनुसार बाडा बनाना,हवादार एवं ढलानयुक्त बाडा बनाना प्रतिदिन सफाई तथा कीटनाशक दवाओं (जैसे नीमआस्त्र एवं फिनाइल) का छिडकाव करना पशु बैछने के लिए पर्याप्त स्थान एवं चारे के लिए ठान की ब्सवस्था करना।	
संतुलित पशु आहार	हरा चारा,खली–चूनी, मिनरल मिक्चर खिलाना,सूखे चारे को यूरिया से उपचार कर साइलेज बनवा कर पशू को खिलाना तथा साफ एवं छना पानी पिलाना।	
बीमारी तथा उनकी रोकथाम	प्रत्येक पशू को हर तीन माह मे डीवार्मिंग गोली खिलाना,बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण करवाना, बीमारियों की पहिचान एवं उपचार करवाना।	
स्वच्छ दुग्ध उत्पादन	थनों को साफ कर सही तरीके से साफ हांथों से दूध दुहना।	

<u>गाय तथा भैंस के लिए घर या बाडा</u>

<u>उन्नत घर एवं बाडे की जरूरत क्यों</u> :–

- ✓ सर्दी,गर्मी एवं बारिश से पशु को बचाने के लिए।
- ✓ जंगली जानवरों की सुरक्षा के लिए।

✓ बीमारियों से पशु को बचाने के लिए।

उन्नत बाडे के प्रमुख बिंदु :–

✓बाडा पूर्व से पश्चिम दिशा मे होना चाहिए।

✓बाडा हवादार एवं प्रत्येक पशु के खडे होने के लिए स्थान (लगभग दो खाट के बराबर) होना चाहिए।

✓बाडे की रोजाना सफाई तथा समय–समय पर कीटनाशक दवाई (नीमआस्त्र एवं फिनाइल) का छिडकाव करना चाहिए।

✓पशु बैठने की जगह समतल एवं थेडा ढलान वाली होनी चाहिए।

✓बाडे की माह मे एक बार चूने से पुताई करना चाहिए।

✓मौशम के अनुसार पशु के रख–रखाव का प्रबंध करना चाहिए।

✓बाडे मे पशु को चारा खिलाने के लिए पक्की एवं उंची ठान होना चाहिए।

भारत के प्रमुख पशुनस्ल

क्र	गायों की नस्लों के नाम	मूल स्थान	दुग्ध उत्पादन लीटर ब्यात 300 दिनों में	शुद्ध नस्ल रखने वाले फार्म
1.	दुधारू नस्ल साहीवाला	मांटगोमरी (पाकिस्तान)	2775–3175 अधिकतम 4535, वसा 4.3 प्रतिशत	आई ,ए,आर, आई,नई दिल्ली करनाला
2.	लाल सिन्ध	सिन्ध (पाकिस्तान)	1725 अधिकतम 5440, वसा 4.5 प्रतिशत	एन, डी आर, आई ,करनाल कृषि संस्थान नैनी ;इलाहावाद पशु –जनन फार्म कालसी, देहरादून
3.	गिरी	कठियावाड़ (भारत)	1675 अधिकतम 3175	सावरमती, अहमदावाद, डेयरीफार्म जूनागढ़
4.	देवनी	हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)	अधिकतम 1580, वसा 4.5 प्रतिशत	दुग्धशाला वम्वई पशु प्रजनन फार्म, उदयागिरि (महाराष्ट्र) राजकीय डेयरी फार्म

दुग्ध उत्पादन हेतु पाली जाने वाली विदेशी गाय की नस्ल

क्र	गाय का नाम	मूल स्थान	प्रति व्यात औसतन दूग्ध उत्पादन (लीटर में)	व्यात अवधि (दिन में)	दूध में वसा
1.	जर्सी	जर्सी द्वीप समूह (ब्रिटेन)	4500लीटर	365	5–5.5

2.	होलस्टीन फ्रिजियन	हालैन्ड	6200–6500	365	3.7
3.	ब्राउन स्विस	स्विजरलेण्ड	5200	365	4.2
4.	गर्नसी	गर्नसी दीप ,फ्रांस	4400.6000	365	5.0
5.	जर्मनी फलैकंवीह	जर्मनी	4000	365	4.1
6.	आयरशायर दीप	आयरशायर दीप	85710	365	4.0

देसी व संकर गायों के उत्पादक गुणों की तुलना

नस्ल का नाम	प्रथम व्यात की आयु (माह में)	दुग्ध 32.9 काल दिन में	दुग्ध उत्पादन (किलोग्राम में)	व्यात काल में प्रतिदिन दुग्ध
देशी गाय हरियाणा	58.7	232.5	1136.7	1.9
साहीवाला	40.2	283.5	1718.7	3.8
रेड सिन्धी	41.7	284.0	1605.0	5.7
थारपारकर	49.4	280.0	1659.0	3.7
गिरि	47.0	257.0	1403.2	2.9
राठी	40.1	331.0	1931.0	3.3
संकर गाय फ्रीजियन 'हरियाणा	33.0	340.0	3195.0	7.0
ब्राउन स्विस ' हरियाणा	29.0	336.0	2785.5	6.6

भैंसो की संबंधित नस्ले एवं उनका विवरण

भैंसो की नस्लों का नाम	मूलतराई स्थान	दुग्ध उत्पादन लीटर/व्यात (300 दिनों में)	शुद्ध नस्ल रखने वाले फार्म
मुर्रा	हरियाणा , दिल्ली, उत्तर प्रदेश	1360–2270 अधिकतम (4550) वसा 7 प्रतिशत	आई. बी. आर इज्जतनगर वरेली राजकीय पशु फार्म मधुरी कु.ंड मथुरा पन्तनगर कृषि विवि (नैनीताल) वावूगढ़ (मेरठ)
भदावरी	भदावर, आागरा, इटावा, भिण्ड, ग्वालियर	450–800 वसा 7–13 प्रतिशत	पशु प्रजनन फार्म भरारी झासी इटावा उप्र
जाफरावादी	जाफरावाद, काठियावाद , जूनागढ़ (गुजरात)	2450 वसा 7–9 प्रतिशत	पशु प्रजनन फार्म मोरवी (गुजरात)
सुरती	वडोदा (गुजरात)	1655 वसा 7–9 प्रतिशत	पशु प्रजनन फार्म वकरोल (वड़ोदा)
मेहसाना	मेहसाना (गुजरात)	1360–1825	पूणे कृषि विवि महाराष्ट्र तथा अहमदाबाद
नागपुरी	नागपुर (महाराष्ट्र)	1000–1200	पशु प्रजनन फार्म, वर्धा (महाराष्ट्र)

मुर्गियों की संबंधित नस्ले एवं उनका विवरण

नस्लों के नाम	मूल स्थान	वजन (किलो में)	अण्डा देने की क्षमता प्रतिवर्ष में

—: एशियाई नस्ल :—				
असील	आन्ध्र प्रदेश ,कर्नाटक उ.प्र.में रामपुर	4.5	3.5	900
बुसरा	महाराष्ट्र, गुजरात	4.5	4.0	-
ब्रम्हा	ब्रहापुत्र नदी का कछार	5.4	4.3	-
कोचीन	चीन का शंघाई जिला	5.0	4.0	175-180
—: अमेरिका नस्ल :—				
रोड आयरलेण्ड रैड	न्यू हेम्पशायर अमेरिका	4.0	3.0	-
—: इंग्लिश नस्ल :—				
आर्पिन्गटन	इग्लैण्ड	4.6	3.6	-
आस्ट्रोलार्प	आस्ट्रेलिया	4.0	3.0	-
ससैक्स	इग्लैण्ड	4.0	3.2	-
कार्निश	इग्लैण्ड	5.5	1.6	-
लेगहार्न	इटली	2.6	2.0	200-250

पशु प्रजनन विधियां

प्राकृतिक प्रजनन

↓

अन्तः प्रजनन

↓

सम प्रजनन

↓

अंतर वंश प्रजनन

कृत्रिम प्रजनन

↓

ब्राह प्रजनन

↓

भिन्न संकरण

↓

प्रजनन संकरण

↓

कामोन्नति संकरण

पशु नस्ल सुधार के तरीके

अच्छी नस्ल के पशु प्राप्त करने के 02 तरीके है।

1. **पशु खरीदकर** :— उपर लिखे हुये गाय एवं भैंस की दुधारू नस्ल के पशु दुध अनुसार 45000 रू. से 70000 रू. में खरीदे जा सकते है।
2. **पशु नस्ल सुधार द्वारा** :— देशी पशु में सुधार से सस्से में दुधारू नस्ल के पशु घर में ही पैदा किये जा सकते है। पशु नस्ल सुधार द्वारा नस्ल सुधार के 02 तरीके है।
   - **सांड द्वारा प्रजनन** — उत्तम नस्ल के सांड द्वारा।
   - **कृत्रिम गर्भाधान द्वारा** — कृत्रिम वीर्यदान एक ऐसी विधि है, जिसमें कृत्रिम रीति से सांड का वीर्य ऋतुमयी गाय में मादा अंग के रास्ते एक नली की सहायता से गर्भाशय में डाला जाता है। कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से पैदा हुई बछिया जब गाय बनती है तो 06 से 08 लीटर/दिन दूध देती है जबकि बछिया की देशी मां आधा से एक लीटर ही दूध देती है। निम्न सारणी में देशी गाय, देशी भैंस (स्थानीय) की अपेक्षा भारतीय नस्ल की गाय, संकर जर्सी ग्रेडेड मुर्रा बेहतर नस्ल है जिसको निम्न तालिका से समझा जा सकता है। इसलिये कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से अच्छी नस्ल नस्ल की गाय भैंस प्राप्त की जा सकती है।

गर्म गाय के लक्षण :—

1. पशु रभाने लगता है।
2. नर पशु का पीछा करती है।
3. दुध में कमी आना।
4. योनिमुख में सूजन तथा लसदार स्त्राव का आना।
5. पशु को गर्भित करने का समय।
6. गर्मी आने के समय 12 से 18 घंटे बाद कृत्रिम गर्भाधान करना।

पशुधन में ऋतु (गर्मी चक्र) व गर्भधारण अवधि तालिका

क	स्थिति	पशु प्रकार	अवधि
1.	ऋतु (गर्मी की अवधि)	गाय व भैंस	18 से 24 घंण्टे
2.	ऋतु चक्र अवधि	गाय व भैंस	21 दिन
3.	गभधारण अवधि	गाय	09 माह
4.	गर्भधारण अवधि	भैंस	10 माह

प्राकृतिक प्रजनन बनाम कृत्रिम गर्भाधान

क	प्राकृतिक प्रजनन	कृत्रिम गर्भाधान
1.	अवांछित नस्लो के बीच में प्रजनन	वांछित नस्ल के बीद से प्रजनन कराया जाता है।

	होता है।	
2.	कुछ ही गायो को गर्भित किया जा सकता है।	बहुत सी गायो में प्रजनन एक अच्छे साड के सीमेन से किया जा सकता है
3.	प्रजनन के दौरान दुर्घटना ग्रस्त होने का भ्रय रहता है।	प्राकृतिक वीर्यदान से होने वाली दुर्घटना से बचा जा सकता है।
4.	अनियमित प्रजनन होता है। एवं दुग्ध उत्पादन कम होता है।	गाय नियमित रूप से बच्चा एवं दूध देती है।
5.	गर्भावस्था की जॉच नही हो पाती है।	गर्भावस्था की जांच आसानी से की जा सकती है।
6.	समय पर साड की उपलब्धता निश्चित नही होती	जो गाय गर्मी पर नहीं आती हो उसकी चिकित्सा की जा सकती है।
7.	संक्रामक रोगो को फेलने का भय रहता है।	गायों/भैसों को प्रजनन संबंधी रोगों से मुक्त रखा जा सकता है।

कृत्रिम गर्भाधान

कृत्रिम विधि द्वारा स्वास्थ साड का वीर्य एकत्र करके मादा जननांग के ग्रीवा या गर्भाशय में यंत्रों की सहायता से उचित समय पर स्वच्छतापूर्वक स्थापित करना कृत्रिम गर्भाधान या वीर्य सेचन कहलाता है।

पशुओं के संक्रामक रोग और उनकी रोकथाम का तरीका :–

- जो रोग, जीवित परजीवियों जैसे जीवाणु, विशाणु, प्रोटोजोआ, फफूंदी, इत्यादि के द्वारा उत्पन्न होते हैं, संक्रामक रोग कहलाते हैं। जो कि एक पशु से दूसरे में फैलते हैं। गिल्टी रोग, कृश्ण जंघा या लंगड़ी, गलाघोटू, क्षय रोग, पशु प्लेग या पोंकनी, खुरपका–मुॅहपका, ब्रूसेलोसिस आदि रोग इसके उदाहरण हैं। इन रोगों से केवल देश में ही अरब रूपयों की हानि होती है।
- बचाव उपचार की अपेक्षा अच्छा है'' यह कथन भारतीय परिस्थितियों में और भी महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि देश में एक तो पशु विकित्सकों, पशु अस्पतालों की संख्या विषाल पशु संख्या के सामने नगण्य हैं दूसरे देश के पशु की कम उत्पादकता व भारतीय कृशकों की खराब आर्थिक स्थिति के कारण महंगी चिकित्सा समय पर करवाना भारतीय कृशकों के लिए संभव नहीं होता हैं। और यदि वे चिकित्सा करवाते है तो तब तक पशु का स्वास्थ्य इतना गिर चुका होता हैं जिसकी क्षति अपूर्णिय हैं। अतः संक्रामक रोगों से बचाव के प्रमुख उपाय नीचे दिये जा रहे हैं।

प्रथक्करण :–

- किसी भी संक्रामित रोग से प्रभावित पशु को समूह से अलग कर देना चाहिए। और उसके खाने–पीने का प्रबंध भी अलग ही करना चाहिए। परिचायक को पहले स्वस्थ पशुओं की

देखभाल करनी चाहिए। इसके पश्चात रोगी पशु के पास जाना चाहिए और इसके पश्चात परिचायक को दवायुक्त पानी से स्नान करना चाहिए। संक्रामक रोग से पीड़ित पशु को चारागाह नही भेजना चाहिए। ब्रूसेलोसिस क्षय आदि संक्रामक रोगों से प्रभावित पशुओं को प्रजनन नही करवाना चाहिए।

धूप दिखाना :–

- प्रातः सूर्य निकलते समय कम से कम एक घण्टे सभी पशुओं को धूप में रखना चाहिए। जाड़े के दिनों में पूरे तक पशुओं को धूप में रखा जा सकता है। सूर्य की पर बैंगनी किरणें रोगाणुओं को मारने में सक्षम है।

नियमित व्यायाम :–

- पशुओं को नियमित व्यायाम कराने से उनमें रोगों के प्रति सहनशक्ति बढ़ती है। जिससे पशु कम बिमार पड़ते है।

स्नान करना :–

- पशुओं को खुरैरा करने के पश्चात प्रतिदिन स्नान करानें से रोगाणु धुल जाते है। जिससे पशुओं के संक्रामक रोग से पीड़ित होने की सम्भावना घट जाती है। तैरने की व्यवस्था होने पर और भी उत्तम रहता है। पानी में हमेशा रोगाणुनाशक दवाओं का प्रयोग करना चाहिए।

चरागाह को बदलना :–

- जिस चारागाह में चरते समय पशु संक्रामक रोग से प्रभावित हुए हों उसका 6 माह तक नही प्रयोग करना चाहिए।

रोगी मृत पशु व बिछावन का प्रबंध :–

- मरे हुए पशु व बिछावन आदि को जला देना चाहिए। या 2 मीटर गहरे गड्ढ़े को बंद कर देना चाहिए। रोगी मृतक पशु की खाल आदि नहीं निकालना चाहिए।

सफाई व निर्जलीकरण :–

- पशुशाला व पशुओं की नियमित सफाई करना चाहिए। ब्लीचिंग पावडर, चूना, फीनोल, साबुन आदि निर्जलीकारक पदार्थो का प्रयोग करना चाहिए।

संतुलित आहार :–

- संतुलित आहार एवं पचनिय राशन देने से पशु कब्ज व आहार सम्बधित बीमारियों से ग्रसित नहीं होते है। और उनकी संक्रामक रोगों से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती हैं।

<u>टीके लगाना</u> :–

- पशुओं को टीके लगाना संक्रामक रोगों से बचाव का सबसे सस्ता व निश्चित उपाय हैं। अधिकांश संक्रामक रोग बरसात में फैलते हैं। क्योंकि अधिक नमी व तापमान रोगाणुओं की वृद्धि के लिए अनुकूल होता है। अतः टीके लगाने का काम बरसात से पूर्व मई–जून में कर लेना चाहिए। आजकल बाजार में लगभग सभी जीवाणुओं व विषाणुओं से होने वाले संक्रामक रोगों के टीके उपलब्ध हैं।

  पशुओं को टीके लगाना संक्रामक रोगों से बचाव का सबसे सस्ता व निश्चित उपाय हैं। अधिकांश संक्रामक रोग बरसात में फैलते हैं। क्योंकि अधिक नमी व तापमान रोगाणुओं की वृद्धि के लिए अनुकूल होता है। अतः टीके लगाने का काम बरसात से पूर्व मई–जून में कर लेना चाहिए। आजकल बाजार में लगभग सभी जीवाणुओं व विषाणुओं से होने वाले संक्रामक रोगों के टीके उपलब्ध हैं।

<u>पशु स्वास्थ्य एवं बीमारियों से बचाव</u> :–

- पशु का मानव जीवन में बहुत महत्व हैं क्योंकि मनुश्य जाति को पौश्टिक आहार अन्य मूल्वान वस्तुएं प्रदान करता हैं। पशुओं की इस क्षमता को सुरक्षित रखने के लिए उसे बीमारियों से संरक्षण प्रदान करने एवं रोगी पशु की समय पर चिकित्सा कराना अत्यन्त आवष्यक हैं। पशुपालक को यह जानना जरूरी हैं कि उसका पशु स्वस्थ हैं या बीमार।

स्वस्थ पशु की जानकारी के लिए पशुपालक को निम्न बातें ध्यान में रखनी हैं।

<u>स्वस्थ पशु</u> :–

- पशु चुस्त नजर आता है।
- पशु की आंखे बड़ी–बड़ी और चमकदार होती हैं।
- मजल (पशुओं के ऊपर वाला भाग) गीले रहेंगे।
- पशु आहार को स्वाद लेकर खायेगा।
- गोबर ठीक बधा हुआ होगा।
- पेशाब का रंग सफेद होगा।
- पशु का तापक्रम सामान्य होगा।

<u>अस्वस्थ पषु</u> :–

- पषु सुस्त गर्दन लटकाये बैठा रहेगा।

- आंखे गढ्ढे में धंसी हुई होगी।
- मजल सूखे रहेंगे।
- पषु आहार नहीं खायेगा।
- गोबर सूखा म्यूकस एवं सख्त होगा।
- पेशाब गाढ़ा म्यूकस एवं सख्त होगा।
- पषु का तापक्रम बढ़ जायेगा।

सामान्यतः पषुओं के अच्छे स्वास्थ्य एवं रोगो से संरक्षण के लिए पषुपालकों को बीमारियों की जानकारी जरूरी हैं। मुख्य बीमारियॉ निम्नलिखित हैं।

- गलाघोंटू एच.एस.।
- ब्लेक ब्वार्टर ।
- रिण्डरपेस्ट।
- रेबीज।
- आफरा आना।
- निमोनिया।
- हड्डी टूटना।
- बुन्ड।
- खून का रोकना।

रिण्डरपेस्ट :–

- इस रोग से गोवंष भैंस, बकरी आदि बीमार होते हैं। यह रोग एक वायरस के द्वारा होता हैं। मुख्य रूप से बड़े पषुओं में यह रोग होता हैं। यह बीमारी दूशित खाने–पीने से फैलती हैं।

लक्षण :–

- पषु को तेज बुखार 104–107 फारेहाईट हो जाता है।
- पषु कॉपने लगता हैं।
- पषु को दस्त हो जाते हैं।
- पषु की आंखे लाल हो जाती हैं।
- आंतों में गहरे काले रंग की धारियां जेबरा पड़ जाती हैं।
- पषु दूध कम देता है।

रोकथाम :–

- पषु को रोग की उत्पत्ति के पूर्व एफ.जी.टी. का 1 मिली. टीका सब को लगवा लेना चाहिए
- पषुपालकों को अस्वस्थ पषुओं से स्वस्थ को अलग रखना चाहिए।
- मरे हुए पषु को गड्ढे में गाड़ देना चाहिए।
- पषुओं को टीके समय से लगवाना चाहिए, ताकि यह रोग नहीं फैलें।

खुरपका–मुँहपका :–

यह एक षीघ्र फैलने वाला संक्रामक रोग हैं। यह एक वायरस के द्वारा होता हैं। इस रोग से गाय–भैंस, बकरी बीमार हो जाते हैं। दूशित चारा पानी के सेवन से बीमारी हो जाती हैं।

लक्षण :–

- खुरों के बीच में और होंठ, मसूड़ों के नीचे छाले पड़ जाते है।
- पषु खाना–पीना कम कर देता हैं।
- तापक्रम बढ़ जाता हैं।
- मुँह से लार टपकती है।
- थनों में भी छालें पड़ जाते है।
- पषु सुस्त खड़ा रहता हैं, या लंगड़ा कर चलता हैं।

निदान :–

- एफ.एम.डी. का टीका 10 मि.ली. पषुओं में लगवा देना चाहिए। साल में दो बार।

रोकथाम :–

- स्वस्थ पषु को खाना–पीना अलग देना चाहिए। खुरों को पोटेषियम परमेगनेट से धोकर फुरासिन मरहम लगा कर पट्टी बांध कर रखने से घाव षीघ्र टीक हो जाता है। मुँह के छाले को पोटेषियम परमेगनेट के 1:2000 घोल से धोकर फिर मीठा सोडा मुँह में लगाने से छालों में आराम मिलता है।

फुटपाथ :–

- पषुपालकों को चाहिए कि अपने गॉव में जहॉ से पषु गॉव से बाहर चरागाह में जाते हैं। वहॉ पर एक फुटपाथ बनवाना चाहिए। जो कि 3–4 मीटर लम्बा, एक मीटर चौड़ा और 3 सेन्टीमीटर गहरा हो। इस फुटपाथ में 1 प्रतिषत कापर सल्फेट का घोल भर कर प्रत्येक पषु को उसके ऊपर से निकलने से पेट के जख्म जल्दी ठीक हो जाते हैं।

गलाघोंटू एच.एस. :–

- यह एक बहुत भयंकर छूतदार बीमारी है। इस बीमारी से गोवंष भैंस आदि पषु रोग ग्रसित होते हैं। यह बीमारी एक बैक्टीरिया से होती हैं। और अधिकतम वर्शा में यह रोग फैलता हैं। गोवंष में दूशित खाना–पीना सेवन करने से बीमारी हो जाती हैं।

बिहान

लक्षण :–

- तेज बुखार 104–106 फारेनहाइट।
- गर्दन गले के चारों तरफ मांसपेषियों में सूजन आना।
- ष्वांस लेने में कठिनाई होना।
- मुँह से लार टपकना।
- खाना–पीना नहीं खाना।
- खूनी पेचिष आना।
- जीभ बाहर निकल आना और गले से घुर–घुर की आवाज निकलना। पषु का गला घुटने लगता हैं। इस कारण इसका नाम गलाघोंटू हैं।

इलाज :–

- सलफामीजाथीन 33) प्रतिषत, 100 मि.ग्रा. षीरा में लगाना।
- टेरामाइसिन 30–50 मिली. षिरा में ।
- हास्टासाईलकलन 500 मि.ग्रा. का पावडर में चटाना।
- पोटेषियम परमेगनेट 1.2000 से मुँह व जीभ को धोना।

रोकथाम :–

- स्वस्थ पषु को बीमार पषु से अलग रखना।
- वर्शा से पहले एच.एस. के टीके लगवाना।
- खाना–पीना दूशित नहीं देना।
- बीमार पषु को षीघ्र चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

ब्लेक क्वाटर फड सूजन :–

- यह बीमारी गोवंष भैंसो में कीटाणुओं द्वारा होती हैं। इस बीमारी से छोटे उम्र के पषु 6 माह से दो वर्श की आयु में प्रभावित होते हैं। यह बीमारी दूशित भोजन के सेवन से हो जाती हैं।

लक्षण :–

- तेज बुखार 104, 106 डिग्री फारेनहाइट।
- बीमार पषु का कम खाना सुस्त रहना।
- पषु लंगड़ा कर चलता हैं एवं गर्दन पुट्ठो, छाती पर सूजन आ जाती हैं।
- सूजन हाथ से दबाने पर चरचराहट की आवाज आती हैं।
- चीरा लगाने पर काले रंग का बदबूदार खून निकलता हैं।

इलाज :–

- 1–20–40 लाख युनिट पैनीसलीन।

- सलफामीजाषीन 33) प्रतिषत, 100 मि.ग्रा. षीरा में लगाने से फायदा होता हैं।
- टेरामाइसिन 30–40 मि.ली. षिरा में लगावें।
- एमपीसिलीन 1–5–2 ग्राम।

रोकथाम :–

- रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग बांधना।
- स्वस्थ पशु को वर्शा के पहले वी.क्यू. टीका लगाना चाहिए।
- मरे हुए पशुओं को गाढ़ देना चाहिए।

चेचक–काऊ फोक्स :–

- यह एक भयानक छूतदार रोग हैं जो एक वायरस के द्वारा गौवंष में होता है।
- बीमार पशु के सम्पर्क में स्वस्थ पशु के मिलने से रोग हो जाता हैं।
- दूशित खाना–पीना के सेवन से यह रोग होता हैं।

लक्षण :–

- पशु को बुखार आ जाता हैं।
- छोटे–छोटे दाने शरीर में (थनों) निकल आते है। बाद में दाने फफोले बन कर फूट जाते हैं।
- पषु दूध नहीं दुहने देता।
- स्क्रोटम में भी दाने पड़ का फफोले बन जाते ळें

रोकथाम :–

- बीमारी से बचने के लिए ग्वालों के हाथ व दूध निकालने वाले बर्तन साफ हों।
- दूध उबाल कर ही पिया जाना चाहिए।
- थनों को हल्के फीनोल घोल से धोकर एलकोहल से साफ करना चाहिए।
- फुंसियों की पपड़ी को इकट्ठा करके जला देना चाहिए।
- मृतक पशु को चूना डालकर, गड्ढ़ा खेदकर गाड़ देना चाहिए।

निमोनिया :–

- यह एक श्वांस की बीमारी हैं। जो एक जीवाणु द्वारा होती हैं। और मौसम की खराबी के कारण भी होती है। इस बीमारी में फेफड़ो में सूजन आ जाती हैं।

लक्षण :–

- श्वांस कठिनाई से लेना।
- पसलियों में दर्द होना।
- बुखार तेज आना।

रोकथाम :–

- पशु को ठंड न लगे इससे बचाना चाहिए।
- पशु घर की खिड़कियों को बोरे से बन्द कर देना चाहिए।
- गरम राख को छान कर पषु के शरीर में लगाकर ऊपर से किसी कपड़े ढक देने से आराम मिलता हैं।
- तेल टरपनटाईन के बंधार देने से भी पशु को श्वांस लेने में आराम मिलता हैं।
- पसलियों में सीने के चारों तरफ विक्स या तारपीन की मालिश करना चाहिए।

घाव या जख्म :—

- शरीर के किसी भी भाग में चोट लग जाने से घाव हो जाता हैं। चमड़ी अलग हो जाती हैं।

इलाज :—

- नीम के पानी से घाव को चारो तरफ से धोना चाहिए जिससे धूल आदि धुल जायें। फिर किसी भी साफ कपड़े से घाव ढंक कर पषु चिकित्सा केन्द्र में इलाज करवाना चाहिए।

हड्डी टूटना :—

- शरीर के किसी भी भाग की हड्डी टूट जाती हैं गिर जाने चोट लग जाने से पशुपालक को चाहिए कि हड्डी के चारो तरफ सुई या बाल रख कर बांस के लम्बे टुकड़ें रस्सी से बांधकर पशु को पास के पषु औशधालय में ले जाकर इलाज करवाना चाहिए। ऐसा करने से हड्डी सही जुड़ेगी अन्यथा खाल के बाहर आ जावेगी तथा ठीक से इलाज नहीं हो पायेगा।

खून बहना :—

- किसी चोट के लग जाने से पशु को खून बहने लगता हैं। पशुपालक को चाहिए कि उस जगह के पास एक मजबूत रस्सी बांधकर पट्टी बांधकर खून को रोकें और फौरन पशु चिकित्सालय में ले जाकर इलाज करवायें वरना खून ज्यादा बह जाने पशु मर जायेगा। अगर खून नाक कान से आ रहा हैं तो पशु के सिर में ठण्डा मटके का पानी या बर्फ से भीगा कपड़ा रखने से खून कम हो जाता हैं। बाद में किसी पास के पशु औशधालय में ले जाकर पशु का इलाज करवाना चाहिए।

बिहान

आफरा आना :—

- पशओ को अधिकतर आफरा आ जाता हैं। पेट फूल जाता हैं। पेट में गैस बन जाने की वजह से पशुपालक अपने पशु को अधिक खाना खिलाते हैं। दूध बढ़ानें के लालच में वह खाना पशु हजम नहीं कर पाता हैं। गैस बाहर नहीं निकलती और पेट फूल जाता है। कभी—कभी व्यायाम कराने से भी पशु बैचेन रहता है। पेट फूल जाता है।

लक्षण :—

- पेट का फूल जाना बायें तरफ पेट फूला दिखाई देगा।
- पशु बार—बार उठक—बैठक करता हैं।
- पशु दर्द के मारे अपनी गर्दन बायें तरफ मोड़े रखेगा।

इलाज :–

- पशु को घुमाना चाहिए, ताकि घुमने से गैस मलद्वार से बाहर निकलें।
- मलद्वार से गोबर निकालने से पेट हल्का होता हैं।
- मुॅह में एक बड़ी लकड़ी रखकर बांध देने से गैस मुॅह के द्वारा बाहर निकल जाती है। पशु को आराम मिलता हैं। पशु को बैठने नहीं देना चाहिए।
- पशुपालको के घरों में हींग और खाने का सोडा होता हैं। हींग और मीठासोडा मीठे तेल में मिलाकर फौरन पिलाने से गैस कम हो जाती हैं।

यदि आफरे में किसी भी तरह का आराम नहीं मिले, तो पास के पशु चिकित्सालय में दिखाना चाहिए।

सावधानियां :–

- पशुपालकों को अपने पशुओं को ताजा दाना खिलाना चाहिए। यह भी देखना हैं कि दाने में फंगस नही हों। दाना खिलाने के बाद फौरन पानी नहीं पिलाना चाहिए। हरा चारा थोड़ा हवा लगने के बाद थेड़ा झाड़कर देना चाहिए।

दस्त लगना :–

- कभी–कभी पशु का पेट खराब हो जाता हैं। उससे पतले दस्त लग जाता हैं। यह परजीवी के कारण खाने में खराबी और गंदा पानी पीने की वजह से भी हो जाता हैं।